International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(3): 14-17

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(3): 14-17
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 05-03-2017
Accepted: 06-04-2017

डॉ. भीमा देवी
पी–एच०डी० (संस्कृत),
गाँव बनूटी तह. व जिला शिमला,
हिमाचल प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ. भीमा देवी
पी–एच०डी० (संस्कृत),
गाँव बनूटी तह. व जिला शिमला,
हिमाचल प्रदेश, भारत

अध्यात्मरामायण में राजनीतिक व्यवस्था

डॉ. भीमा देवी

प्रस्तावना

रामराज्य काल में वैदिक एवं भौतिक किसी प्रकार का संताप नहीं था। समस्त जनता अपने–अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए प्रेमपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करती थी। प्रस्तुत ग्रन्थ अध्यात्मरामायण में संसार से मुक्ति पाने के लिए भक्ति को अति उत्तम माना गया है। कहा भी है–

अध्यात्मरामायणगतः श्लोकं श्लोकाध्रमेव वा।
यः पठेद्भक्तिसंयुक्तः स पापन्मुच्यते क्षणात्।।

अर्थात् जो व्यक्ति अध्यात्मरामायण के एक श्लोक अथवा आधे श्लोक का भी पाठ करता है वह तत्क्षण पापों से मुक्त हो जाता है। राम धर्मपूर्वक राज्यशासन करते रहे। तीनों लोक जिनके चरणकमलों की वन्दना करते हैं उन माया मानव शरीरधारी रामचन्द्र ने विधिपूर्वक दस हजार वर्ष राज्य किया। अध्यात्मरामायण में राजनीतिक व्यवस्था के अन्तर्गत राजनीति का स्वरूप, राष्ट्र, राज्य, राज्यव्यवस्था, सेना और युद्ध न्यायव्यवस्था तथा दण्डविधान का विवेचन किया गया है। इस ग्रन्थ में राष्ट्र का प्रयोग राज्य के लिए किया गया है। राज्याभिषेक सर्वगुणसम्पन्न ज्येष्ठ पुत्र का ही होना चाहिए। राजा धर्मात्मा, प्रजापालक तथा राज्यव्यवस्था को चलाने वाला, राष्ट्र को बाहरी आक्रमणों से बचाने वाला बताया गया है।

राजनीति का स्वरूप

राजनीति में 'सर्वे पदाः अस्पिदे निमग्नाः' के अनुसार मनुस्मृति में मानव को मानवता से समृद्ध करने वाले सभी शास्त्र तथा सभी धर्म स्वभावतः सम्मिलित हो जाते हैं क्योंकि राजनीति के ऊपर ही सभी धर्मों का पालन कराने का उत्तरदायित्व होता है।[1] कौटिल्य अर्थशास्त्र में आदर्श राजनीति का स्वरूप यही है कि आन्वीक्षिकी, त्रयी तथा वार्ता इन तीनों के योगक्षेम को अपने सुचारू क्रियान्वयन से सुरक्षित रखे। कौटिल्य अर्थशास्त्र में कहा गया है–

दण्डनीतिनलब्धलाभार्थ लब्धपरिहारिणी, रक्षितविवर्धनी
वृद्धस्य तीर्थेषु प्रतिवायिनी चेति।[2]

अर्थात् दण्डनीति के चार फल हैं–अप्राप्त की प्राप्ति, प्राप्त की रक्षा, रक्षित का संवर्धन और वर्धित का शास्त्रसम्मत लोककल्याण कार्यों में विनियोग। इस प्रकार लोगों के जीवन की रक्षा दण्डनीति के क्रियान्वन पर ही निर्भर होती है। अतः राजनीति सभी ग्रन्थों का मूल है। राजनीति से अभिप्राय राज्य सम्बन्धी नीति। राजनीति शब्द दो पदों से मिलकर बना है। इसका शाब्दिक अर्थ है–राजा का क्षेत्र। राज्य से अभिप्राय राजा के क्षेत्र या संस्था से है। नीति शब्द 'नी' धातु से क्तिन् प्रत्यय लगाकर बना है। 'नी' का अर्थ है–निर्देश देना या मार्ग प्रदर्शन करना। नीति का अर्थ है–उचित निर्देशन।[3]
प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रमाद रहित राम को परम अद्वितीय, सबके आदिकरण और प्रकृति के गुणप्रवाह से परे बतलाया गया है।

'वदन्ति रामं परमेकमाघनिरस्तमायागुणसंप्रवाहम्।[4]

अध्यात्मरामायण में राजा के रूप में राम को प्रतिपादित किया गया है। राजा के पद पर आसीन होने के लिए यह आवश्यक था कि व्यक्ति क्षत्रिय हो। इस ग्रन्थ के किष्किन्धाकाण्ड में कहा गया है कि

क्षत्रिय होने पर ही कोई मनुष्य राजनीति का सामना कर सकता है। जब राम वाली पर छिपकर बाण का प्रहार करते हैं तो उस समय वाली कहता है–''यदि क्षत्रियदायादो मनोर्वंशसमुद्भवः।
अर्थात् यदि आप क्षत्रियकुमार हैं और आपका जन्म मनु जी के पवित्र वंश में हुआ है और मेरे सामने आकर युद्ध किया होता तब आपको उसका कोई फल मिलता।

शशास रामो धर्मेण राज्यं परमधर्मवित्।
कथां संस्थापयामास सर्वलोकमलापहाम।।5

अर्थात् राम धर्मपूर्वक राज्यशासन करते रहे और उन्होंने सम्पूर्ण लोकों के पाप दूर करने वाली अपनी पवित्रकीर्ति–कथा संसार में स्थापित की। राजा का महत्त्वपूर्ण कार्य अपने जनपद की बाह्य आक्रमण से रक्षा करना होता था। इसके लिए राजा एक सुसंगठित सेना रखता था और युद्ध करने के भी अनेक कारण होते थे। स्त्री के अपहरण से उसकी मुक्ति हेतु युद्ध–यथा राम और रावण का युद्ध। अतः कह सकते हैं कि अध्यात्मरामायण में राजा बनने के लिए क्षत्रिय होना आवश्यक है।

राष्ट्र

ऋग्वेद में राष्ट्र शब्द का प्रयोग स्थल–स्थल पर हुआ है।[6] राष्ट्र शब्द की व्युत्पत्ति दीप्त्यर्थक 'राज' धातु से हुई मानी जाती है जिसमें औणादिक 'ष्ट्रन' प्रत्यय जोड़ा गया है।[7] याज्ञवल्क्य में कहा गया है–स्वाम्यमात्यो जनो दुर्ग कोशो दण्डस्तथैव च मित्रान्येताः प्रकृतयो राज्यं सप्ताङ्गमुच्यते।।[8]
अर्थात् (1) स्वामी या राजा (2) अमात्य (3) राष्ट्र (4) दुर्ग या राजधानी (5) कोश (6) दण्ड (7) मित्र, इन सात अंगों को स्वीकार किया गया है। मनुस्मृति के अनुसार –

मनुस्मृति जांगलं सस्यसम्पन्नमार्यप्रायमनाविलम्।
रम्यमानतसामन्तं स्वीजीव्यं देशमावसेत।।[9]

मनु के द्वारा कहा कि राष्ट्र धन–धान्य सम्पन्न, धर्निष्ठ, रोगरहित, रमणीय और जीविका सम्पन्न होना चाहिए। इस ग्रन्थ में इस बात की पुष्टि की गई है कि राज्यभिषेक सर्वगुणसम्पन्न और ज्येष्ठ पुत्र का ही होना चाहिए, वही उसका उत्तराधिकारी हैं। अध्यात्मरामायण के उत्तरकाण्ड में वर्णन आया है–

ततः सर्वगुणोपेतं रांराजीवलोचनम्।
ज्येष्ठं राज्येऽभिषेक्ष्यामि वृद्धोऽमं मुनिवुङ गवाः।।[10]

कहने का अभिप्राय है कि राजा को सामनीति अथवा बलपूर्वक कार्य करना चाहिए। राजा को बन्धुत्व का विचार नहीं करना चाहिए क्योंकि राजाओं के बन्धु उनके कब हितकारी हुए हैं अर्थात् राजाओं के बन्धु कभी हित नहीं करते।[11]

राजा

'राजते इति राजा' इस अर्थ में राजा शब्द दीप्त्यर्थक 'राजृ' धातु के औणादिक 'कनिन' प्रत्यय के संयोग से निष्पन्न हुआ है।[12] जो व्यक्ति शोभा सम्पन्न और तेजस्वी होता है वह राजा कहलाता है। डॉ. हरिनारायण दीक्षित ने अपनी पुस्तक 'संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना' में राजा के अनेक पर्यायवाची शब्द दिए हैं। (1) मनुष्यों की रक्षा करने वाला। (2) प्रजा पर शासन करने वाला (3) पृथ्वी की रक्षा करने वाला। (4) पृथ्वी पर शासन करने वाला।[13] मनुस्मृति में कहा है–''रक्षोहणो वो बलगहनः प्रोक्षामि वैष्णववान्''[14] राजा के लिए वैष्णववान शब्द का प्रयोग किया है। तैतिरीय ब्राह्मण में भी कहा है–

प्रजापतिरिन्द्र सृजतानुजावरदेवान्।
अतो वा इन्द्रो देवनामधिपतिरभवत।।[15]

अर्थात् इन्द्र द्वारा देवताओं का राजा बनने का उल्लेख मिलता हैं। अध्यात्मरामायण में राजा का प्रमुखतम कर्त्तव्य प्रजा का पालन तथा प्रजा की रक्षा करना है। रामराज्य के शासनकाल में राजा अपने द्वारा दिए गए वचन का पूर्ण रूप से पालन करता था। इसके लिए चाहे उसे अपनी पत्नी, पुत्र यहाँ तक राज्य का ही त्याग क्यों न करना पड़े। राम के शासनकाल में पृथ्वी धनधान्य से परिपूर्ण और वृक्षफलादि से सम्पन्न थे। समस्त पुरूष धर्मपरायण थे, स्त्रियाँ पति–सेवा में तत्पर रहती थी और किसी को भी अपने पुत्र का मरण नहीं देखना पड़ता था। राम ने विधिपूर्वक दस हजार वर्ष राज्य किया।[16] राजा को एकपत्नीव्रत वाला कहा गया है। ''एकपत्नीव्रतो रामोराजर्षि सर्वदाशुचिः।''[17] राजा पुत्र प्राप्ति के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ का भी अनुष्ठान करते थे 'अस्माभिः सहितः 'पुत्रकामेष्टिशीघ्रमाचरं' अतः राजा सर्वगुणसम्पन्न होता था। वह शूरवीर, योद्धा और समस्त शक्तियों से सम्पन्न होता था।

राज्यव्यवस्था

आधुनिक युग में किसी भी राज्यव्यवस्था का विवरण तब तक पूरा नहीं होता है जब तक कि राज्य के कार्यों की मीमांसा न हो जाये। यदि ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो कहा जा सकता है कि 18वीं शताब्दी के अन्त तक वह राज्यव्यवस्था श्रेष्ठ मानी जाती थी जो लोगों के जीवन में न्यूनतम हस्तक्षेप करती थी।[19]
मनुस्मृति में राज्यव्यवस्था के लिए कहा गया है–

क्षत्रियस्य परो धर्मः प्रजानामेवपालनयम।
निर्दिष्टफल भोक्ता हि राजा धर्मेण युज्यते।।[20]

राजा को चोर–डाकुओं से प्रजा की रक्षा करनी चाहिए, अन्यथा वह मरा हुआ समझा जाएगा। प्रजापालन करना प्रजा का क्षत्रिय धर्म है। इस शास्त्रोक्त फल को भोगने वाला राजा धर्म से युक्त होता है। राज्य की समृद्धि के लिए एक सुयोग्य राजा का होना अति आवश्यक है क्योंकि उसका सम्बन्ध समस्त प्रजा से होता है। 'प्रजानुरंजन' ही उसका प्रमुख कर्त्तव्य हुआ करता है।[21] केवल जन–समूह से ही राज्य का निर्माण नहीं होता प्रत्युत्त राज्य के लिए जन–समूह का भौगोलिक सीमाओं के भीतर रहना परमावश्यक है।[22] अध्यात्मरामायण में राजा दशरथ द्वारा प्रजा से अनुमति लेते हुए कहा कि 'ज्येष्ठं राज्येऽभिषेक्ष्यामि' अर्थात् मेरा विचार है कि मैं अपने सर्वगुणसम्पन्न ज्येष्ठ पुत्र राम को राज्यपद पर अभिषिक्त कर दूँ।[23] राजा दशरथ कैकेयी के वशीभूत थे। राजा को सत्यप्रतिज्ञ होना चाहिए। एक बार जो बात कह दे उसे पूरा करना उसका कर्त्तव्य है। रामराज्य में समस्त पुरूष धर्मपरायण थे। स्त्रियाँ पति–सेवा में तत्पर रहती थी और किसी को अपने पुत्र का मरण नहीं देखना पड़ता था।[24] अतः कह सकते हैं कि एक अच्छा सुयोग्य राजा ही राज्यव्यवस्था को सुचारू रूप से चला सकता है।

सेना और युद्ध

राष्ट्र को बाहरी आक्रमणों से बचाए रखने के लिए सेना का संगठन आवश्यक है। मनुस्मृति में कहा है–

समोत्रमाधमैः राजात्वाहूतः पालयन्प्रजाः।
स निवर्तेत संग्रामात क्षात्रधर्ममनुस्मरन।।[25]

मनुस्मृति में युद्ध को राजा का धर्म बताया गया है। किसी राजा को यदि उससे शक्तिशाली व्यक्ति भी युद्ध के लिए ललकारता है तो उसे युद्ध को धर्म समझकर चुनौती को स्वीकार करना चाहिए। 'युध्यमानाः परं शक्त्या स्वर्गं यान्त्यपराङ्गमुखा'[26] अर्थात युद्ध से विमुख न होने वाले राजा कों मनुस्मृति में स्वर्गगामी की पद्धति दी गयी है। बौद्धिक दृष्टि से विकसित होने पर भी व्यक्ति के अनौचित्यपूर्ण कार्य को रोकने के लिए एवं उनके प्रतिकार के लिये प्रत्येक राज्य को एक सुसंगठित सेना की जरूरत होती है।[27]

अध्यात्मरामायण में दो प्रकार की सेनाओं का उल्लेख है। (1) वानर सेना (2) राक्षस सेना। इसके अतिरिक्त नौ सेना और वायु सेना का संक्षेप में वर्णन हैं। उदाहरणतया सुग्रीव राम से कहते हैं–

एतान्पश्य महासत्त्वान शूरान्वानरपुङ्गवान
त्वत्प्रियार्थं समुद्युक्तान्प्रवेष्टुमपि पावकम्।।[28]

अर्थात् हे प्रभु! आप चिन्ता को त्याग दो, इन महापराक्रमी और शूरवीर वानरवीरों को देखो, अपना प्रिय करने के लिए ये सब अग्नि में प्रवेश करने को भी तैयार हैं। शुक ने राम की सेना का उल्लेख इस प्रकार किया है। राम की सेना में चार पुरूषश्रेष्ठ ही पर्याप्त हैं। एक लाख यूथपतियों से घिरा हुआ वानरराज सुग्रीव का सेनापति अग्निनन्दन 'नील' है। जो कमल–केशर की–सी आभा वाला तथा पर्वतशिखर के समान विशालकाय है। रावण की सेना भी बड़े–बड़े बलवान राक्षसों से युक्त थी। उदाहरणस्वरूप रावण की सेना देवशत्रु, निकुम्भ, देवान्तक और नरान्तक आदि रणकुशल वीर और समस्त बलवान योद्धाओं से युक्त थी।

देवशत्रुर्निकुम्भश्च देवान्तकरान्तकौ।
अपरे बलिनः सर्वे ययुर्युद्धाय वानरैः।।[29]

प्रस्तुत ग्रन्थ में कालनेमि नामक महादैत्य महाबली कुम्भकर्ण का वर्णन आया है जो सदा ही निद्रा के वशीभूत रहता है। सेना के बाद युद्ध का वर्णन संक्षेपतः हुआ है। राम का धर्मयुद्ध और रावण का अधर्मयुद्ध कहा गया है। प्रस्तुत ग्रन्थ में राम के कालाग्नि के समान तेजोमय बाण से युद्ध करने का वर्णन है। ''तूणीराबाणमादाय कालाग्नि सदृशप्रभम्। राम के वज्रतुल्य महाबाण ने जब रावण को वेध डाला, तब उसकी दशा देखकर अर्न्धचन्द्राकार बाण से सूर्यसदृश प्रकाशमान उसका मुकुट काट डाला था। अतः राम–रावण युद्ध में इन शस्त्रों का प्रयोग किया गया था।

न्यायव्यवस्था

राज्य में शान्ति और सुव्यवस्था स्थापित करना, निष्पक्ष न्याय करना एवं अपराधी को दण्ड देना राजा का प्रधान कार्य है। धर्मशास्त्रों में राजा द्वारा न्याय करने के लिए पहले अपने मन्त्रियों, विद्वान् ब्राह्मणों एवं सभी के साथ परामर्श करके तत्पश्चात् जनता के समक्ष निःस्वार्थ भाव से अपने विचार रखने का उल्लेख है।[30] अध्यात्मरामायण में प्रथम और अन्तिम न्यायालय राजा को ही माना गया। प्रस्तुत ग्रन्थ में बताया गया है कि सही में वही राजा माना जाता है जो न्याय को सही ढ़ंग से कर सके चाहे उसके लिए उसे अपनी पत्नी का भी त्याग करना पडे तो भी वह पीछे नहीं हटे। राजा ने न्याय करते हुए कहा कि सीता के कारण मेरी बड़ी लोक निंदा हो रही है, लक्ष्मण तुम कल सवेरे ही सीता को रथ पर चढ़ाकर वाल्मीकि मुनि के आश्रम के समीप छोड़ आओ।[31] इसमें इस बात की पुष्टि होती है कि राजा निष्पक्ष रूप से निर्णय लेता था। राजा को निर्णय लेने से पहले अपने राजगुरू, मुनिजनों और मन्त्रियों से परामर्श लेना पड़ता था। जैसे –

विश्वामित्रोऽसितः कण्वो दुर्वासा भृगुरीङ्गराः।
कश्यपो वामदेवोऽत्रिस्तथा सप्तर्षयोऽमलाः।।[32]

अर्थात् राम ने दरबार में विश्वामित्र, असित, कण्व, दुर्वासा, भृगु, अंगिरा, कश्यप, वामदेव, अत्रि तथा निर्मल स्वभाव सप्तार्षेगण से परामर्श लिया था।

दण्डविधान

'दण्ड' शब्द को 'दम' धातु से निष्पन्न माना गया है, जिसका अर्थ रोकना या निवारण है। अपराधों को पुनः होने से रोका जा सके यह भावार्थ है।[33] मनुस्मृति में कहा गया है–

सत्यमर्थं य संपश्ययेदात्यानमथ साक्षिणः।
देशं रूपं च कालं चव्यवहारविधौ स्थितः।।[34]

राजा को दण्डविधि में सत्यव्यवहार व्यक्ति, साक्षी, देश और काल देखकर निर्णय करना चाहिए। अध्यात्मरामायण में दण्डविधान से सम्बन्धित वर्णन आया है कि सुग्रीव दुष्टचित्त वाले वाली के छोटे भाई थे। वाली ने सुग्रीव की स्त्री छीनकर उसे घर से बाहर निकाल दिया। इस परस्त्री हरण के कारण राम ने वाली को दण्ड दिया। उन्होंने बाण से वाली के वक्षः स्थल को वेध डाला। बाण लगते ही वाली बड़ा घोर शब्द करता हुआ उछलकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। प्रस्तुत ग्रन्थ में परस्त्री हरण करने का भी वर्णन हुआ है। परस्त्री हरण के कारण राम ने वाली को दण्ड दिया था। रावण ने भी परस्त्री सीता का हरण किया था। रावण भिक्षुक का वेष बना दण्ड कमण्डलु के सहित सीता के पास आया था। रावण ने सीता को हाथों से उठाकर और रथ में डालकर तुरन्त आकाश मार्ग से चल दिया था। सीता का हरण करने के कारण ही राम ने रावण के प्राणों का अन्त कर दिया।

निष्कर्षतः कह सकते है अध्यात्मरामायण में राजा को प्रथम और अन्तिम न्यायलय कहा गया है। समस्त जनता अपने–अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए प्रेमपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करती थी।

सन्दर्भ सूची

1. राजधर्मान्यवक्षामियथावृत्तों भवेन्नृपः। संभवश्च यथा तस्य विद्धिश्च परमा यथा।। मनुस्मृति, 7.1।
2. अन्वीक्षिकीत्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो दण्डः।। कौटिल्य अर्थशास्त्र, 1.4।
3. वाल्मीकि रामायण में राजनीतिक तत्व, भूमिका भाग, पृ० 1।
4. अध्यात्मरामायण, 1.1.12।
5. वही, 7.4.28।
6. मम द्विता राष्ट्रंक्षत्रियस्य। ऋग्वेद, 4.4.2.1।
7. सर्वधातुभ्भः ष्ट्रन, सिद्धान्त कौमुदी, उणादि प्रकरण, 4.158।
8. याज्ञवल्क्य स्मृति, 1.353।
9. मनुस्मृति, 7.69।
10. अध्यात्मरामायण, 2.2.3.।
11. साम्नानाथ बलेनापि राज्ञां बन्धुः कुतः सुहत्।। वही, 7.2.28।
12. कनिन्यु–वृषि–ताक्षि–रालि धन्विद्युप्रतिदिवः सिद्धान्त कौमुदी उणादि प्रकरण।
13. संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना, पृ० 32।
14. मनुस्मृति, 5.25।
15. तैत्तिरीय ब्राह्मण,2.2.101–2।
16. दसवर्षसहस्त्राणि मायामानुषविग्रहः।। अध्यात्मरामायण, 7.4.29।
17. वही, 7.4.30।
18. वही, 1.3.5।
19. वाल्मीकीय रामायण में राज्य, समाज एवं अर्थव्यवस्था, पृ० 9।
20. मनुस्मृति, 7.144।
21. वाल्मीकि रामायण एवं रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन, पृ० 588।
22. धर्मशास्त्र का इतिहास, डॉ०पी०काणे, भाग 2 पृ० 586।
23. अध्यात्मरामायण, 2.2.3।
24. जनाधर्मपराः सर्वेपतिभक्तिपराः स्त्रियः। नापश्यत्पुत्रमरणं कश्चित्द्राजनि राघवे।। वही, 7.4.22.।
25. मनुस्मृति, 7.87।
26. वही, 7.89।
27. वाल्मीकि रामायण में राजनीतिक तत्व, पृ० 213।
28. अध्यात्मरामायण, 6.1.10।
29. धर्मशास्त्र का इतिहास, डॉ०पी०वी०काणे, भाग–2, पृ० 718।
30. सीतां प्रातः समानीन वाल्मीकेराश्रमान्तिके, अध्यात्मरामायण, 7.4. 55।
31. वही, 7.1.7।

32. स्मृतियों में राजनीति और अर्थशास्त्र, पृ० 145।
33. मनुस्मृति, 9.45।
34. विभेद स शरो वक्षो वालिनः कम्पयन्महीम्। उत्पपात महाशब्दं मुञ्चन्सः निपपातह।। अध्यात्मरामायण, 4.1.47।